''मीठे बच्चे – संगमयुग पर तुम्हें बाप द्वारा अच्छी बुद्धि और श्रेष्ठ मत मिलती है, जिससे तुम ब्राह्मण से देवता बन जाते हो''

प्रश्नः- तुम बच्चे किस मस्ती में रहो तो चलन बड़ी रॉयल हो जायेगी?

उत्तरः- तुम्हें ज्ञान की मस्ती चढ़ी रहनी चाहिए। ओहो! हम भगवान के सम्मुख बैठे हैं। हम यहाँ से जायेंगे, जाकर विश्व का मालिक, क्राउन प्रिन्स बनेंगे। जब ऐसी मस्ती रहे तो चलन स्वत: रॉयल हो जायेगी। मुख से बहुत मीठे बोल निकलेंगे। आपस में बहुत प्यार रहेगा।

गीतः- महफिल में जल उठी शमा...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) वाणी से जो सुनते हैं उस पर मंथन करना है। पुरुषोत्तम बन रहे हैं इसलिए चलन बहुत रॉयल बनानी है। मुख से कभी पत्थर नहीं निकालने हैं।

2) बहुतों को आप समान बनाने की जवाबदारी समझ सर्विस पर तत्पर रहना है। कोई भी छी-छी गंदा काम करके डिस-सर्विस नहीं करनी है।

वरदानः- अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं का आह्वान करने वाले विश्व कल्याणकारी भव

जितना लास्ट कर्मातीत स्टेज समीप आती जायेगी उतना आवाज से परे शान्त स्वरूप की स्थिति अधिक प्रिय लगेगी – इस स्थिति में सदा अतीन्द्रिय सुख की अनुभूति होगी और इसी अतीन्द्रिय सुखमय स्थिति द्वारा अनेक आत्माओं का सहज आह्वान कर सकेंगे। यह पावरफुल स्थिति ही विश्व कल्याणकारी स्थिति है। इस स्थिति द्वारा कितनी भी दूर रहने वाली आत्मा को सन्देश पहुँचा सकते हो।

स्लोगनः- हर एक की विशेषता को स्मृति में रख फेथफुल बनो तो संगठन एकमत हो जायेगा।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

जैसे ब्रह्मा बाप के लिए सबके मुख से एक ही आवाज निकलती है – ''मेरा बाबा''। ऐसे आप हर श्रेष्ठ आत्मा के प्रति यह भावना हो, महसूसता हो। हरेक से मेरे-पन की भासना आये। हरेक समझे कि यह मेरे शुभचिन्तक, सहयोगी सेवा के साथी हैं, इसको कहा जाता है – बाप समान। यही है सम्पन्न वा सम्पूर्ण कर्मातीत स्टेज।

''मीठे बच्चे – ज्ञान धन का दान करने के लिए विचार सागर मंथन करो, दान का शौक रखो तो मंथन चलता रहे''

प्रश्नः- ज्ञान मार्ग में सदा अपने को तन्दुरुस्त रखने का साधन क्या है?

उत्तरः- सदा अपने आपको तन्दुरुस्त रखने के लिए बाबा द्वारा जो भी ज्ञान घास (मुरली) मिलती है, उसे खाकर फिर उगारना चाहिए अर्थात् मंथन करना चाहिए। जिन बच्चों को मंथन करने की अर्थात् हज़म करने की आदत है, वह बीमार नहीं पड़ सकते। सदा तन्दुरुस्त वह है जिसमें विकारों की बीमारी नहीं।

गीतः- तू प्यार का सागर है...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) बाप जो अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं, उन पर विचार सागर मंथन कर बहुतों का कल्याणकारी बनना है। उल्टी-सुल्टी बातें एक कान से सुन दूसरे से निकाल देनी हैं।
2) कोई भी आसुरी स्वभाव है तो उसे छोड़ना है। बाप जो ज्ञान घास खिलाते हैं, उसे उगारते रहना है।

वरदानः- सर्व खजानों को विश्व कल्याण प्रति यूज़ करने वाले सिद्धि स्वरूप भव

जैसे अपने हद की प्रवृत्ति में, अपने हद के स्वभाव-संस्कारों की प्रवृत्ति में बहुत समय लगा देते हो, लेकिन अपनी-अपनी प्रवृत्ति से परे अर्थात् उपराम रहो और हर संकल्प, बोल, कर्म और सम्बन्ध-सम्पर्क में बैलेन्स रखो तो सर्व खजानों की इकॉनामी द्वारा कम खर्च बालानशीन बन जायेंगे। अभी समय रूपी खजाना, एनर्जी का खजाना और स्थूल खजाने में कम खर्च बालानशीन बनो, इन्हें स्वयं के बजाए विश्व कल्याण प्रति यूज़ करो तो सिद्धि स्वरूप बन जायेंगे।

स्लोगनः- एक की लगन में सदा मगन रहो तो निर्विघ्न बन जायेंगे।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

अब सेवा के, कर्म के भी बन्धन में नहीं आओ। हमारा स्थान, हमारी सेवा, हमारे स्टूडेन्ट, हमारी सहयोगी आत्मायें, यह भी सेवा के कर्म का बन्धन है, इस कर्मबन्धन से न्यारे अर्थात् कर्मातीत। जैसे ब्रह्मा बाप ने सदा न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स रखा। सबको अपनेपन की अनुभति कराते भी हर एक का सम्बन्ध उस एक से (निराकार बाप से) जुटाया, ऐसे आप बच्चे भी सबको अपनेपन की महसूसता दिलाए आत्माओं को समीप ठिकाने पर पहुंचाने वाले बनो, तब कहेंगे बाप समान।

''मीठे बच्चे – शिवबाबा का बनकर कोई भी भूल नहीं करना, भूल करने से बाप का नाम बदनाम कर देंगे''

प्रश्नः- सबसे बड़ी प्रवृत्ति किसकी है और कैसे?

उत्तरः- शिवबाबा की सबसे बड़ी प्रवृत्ति है। भक्ति में सब त्वमेव माता च पिता कहकर पुकारते हैं तो प्रवृत्ति वाला हुआ ना। परन्तु जब तक वह साकार में न आये तब तक उनकी कोई प्रवृत्ति नहीं क्योंकि ऊपर में तो आत्मायें बाप के साथ निराकारी रूप में रहती हैं। जब साकार में आकर इनमें प्रवेश करते हैं तो सबसे बड़ी प्रवृत्ति है।

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) सदा स्मृति रहे कि इस कल्याणकारी युग में हर बात में कल्याण है, हमारा अकल्याण हो नहीं सकता। हर बात में कल्याण समझ सदा निश्चिंत रहना है।

2) सदा गुलाब बनने के लिए पढ़ाई पर पूरा-पूरा ध्यान देना है। पढ़ाई में गफ़लत नहीं करनी है। अक का फूल नहीं बनना है।

वरदानः- अमृतवेले के महत्व को समझ इस समय को यथार्थ रीति यूज़ करने वाले सदा शक्ति सम्पन्न भव

स्वयं को शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए रोज़ अमृतवेले तन की और मन की सैर करो। जैसे अमृतवेले समय का भी सहयोग है, बुद्धि सतोप्रधान स्टेज का भी सहयोग है, तो ऐसे वरदानी समय पर मन की स्थिति भी सबसे पावरफुल स्टेज की चाहिए। पावरफुल स्टेज अर्थात् बाप समान बीजरूप स्थिति। साधारण स्थिति में तो कर्म करते भी रह सकते हो लेकिन वरदान के समय को यथार्थ रीति यूज करो तो कमजोरी समाप्त हो जायेगी।

स्लोगनः- अपने शक्तियों के खजाने से शक्तिहीन, परवश आत्मा को शक्तिशाली बनाओ।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

जैसे ब्रह्मा बाप सदा आवाज से परे अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करते रहे। इससे वे सर्व व्यक्त आकर्षणों से परे शक्तिशाली न्यारी और प्यारी स्थिति में रहे। ऐसे आप बच्चे भी उस श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहने का अभ्यास करते रहो, तो कर्म करते भी विशेष शान्ति की शक्ति का अनुभव करते रहेंगे, इसी अभ्यास से बाप समान सम्पन्न व सम्पूर्ण बन जायेंगे।

''मीठे बच्चे – स्वीट फादर और स्वीट राजधानी को याद करो तो बहुत-बहुत स्वीट बन जायेंगे''

प्रश्नः- तुम बच्चे कौन-सा पुरुषार्थ कर मनुष्य से देवता बनते हो?

उत्तरः- तुम अभी ज्ञान मानसरोवर में डुबकी मार ज्ञान परी बनते हो, ज्ञान स्नान से तुम्हारी सीरत बदलती जाती है। जो भी अवगुण हैं, निकलते जाते हैं। बाप और विष्णुपुरी को याद कर तुम पावन देवता बन जाते हो। देवताओं में पवित्रता की ही आकर्षण है। इसी कारण मनुष्य देवताओं के मन्दिरों में दूर-दूर से खींचकर जाते हैं।

गीतः- हमारे तीर्थ न्यारे हैं...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) स्वीट बनने के लिए स्वीट बाप को बड़े प्यार से याद करना है। सच्चे बाप से सच्चा रहना है। एक बाप की श्रेष्ठ मत पर चलना है।

2) पुरुषार्थ कर सम्पूर्ण बनना है। भारत को पावन बनाने की सर्विस करनी है। किसी भी बात में संशय नहीं उठाना है।

वरदानः- ज्ञानी तू आत्मा बन ज्ञान सागर और ज्ञान में समाने वाले सर्व प्राप्ति स्वरूप भव

जो ज्ञानी तू आत्मायें हैं वह सदा ज्ञान सागर और ज्ञान में समाई रहती हैं, सर्व प्राप्ति स्वरूप होने के कारण इच्छा मात्रम् अविद्या की स्टेज स्वत: रहती है। जो अंश मात्र भी किसी स्वभाव-संस्कार के अधीन हैं, नाम-मान-शान के मंगता हैं। क्या, क्यों के क्वेश्चन में चिल्लाने वाले, पुकारने वाले, अन्दर एक बाहर दूसरा रूप है – उन्हें ज्ञानी तू आत्मा नहीं कहा जा सकता।

स्लोगनः- इस जीवन में अतीन्द्रिय सुख व आनंद की अनुभूति करने वाले ही सहजयोगी हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न वा कर्मातीत बनना। इस लक्ष्य को पाने के लिए विशेष स्वयं में समेटने की शक्ति, समाने की शक्ति धारण करो। कर्मबन्धनी आत्माएं जहाँ हैं वहाँ ही कार्य कर सकती हैं और कर्मातीत आत्मायें एक ही समय पर चारों ओर सेवा का पार्ट बजा सकती हैं क्योंकि कर्मातीत हैं। उनकी स्पीड बहुत तीव्र होती है, सेकण्ड में जहाँ चाहे वहाँ पहुँच सकती हैं।

''मीठे बच्चे – भारत सभी का तीर्थ स्थान है, इसलिए सब धर्म वालों को भारत तीर्थ की महिमा सुनाओ, सबको सन्देश दो''

प्रश्नः- किस पुरुषार्थ से तुम्हारी अन्त मती सो गति होगी? निद्राजीत बन जायेंगे?

उत्तरः- रात को जब सोने जाते हो तो पहले बाप और वर्से को याद करो, स्वदर्शन चक्र फिराते रहो। जब नींद आये तो सो जाओ फिर अन्त मती सो गति हो जायेगी। सवेरे उठेंगे तो वही प्वाइंट याद आती रहेगी। ऐसा अभ्यास करते तुम नींद को जीतने वाले बन जायेंगे। जो करेगा सो पायेगा। करने वालों की चलन प्रसिद्ध होती जाती है।

गीतः- जो पिया के साथ है...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) शरीर को ठीक रखने के लिए ज्ञान योग की धारणा करनी है। किसी भी चीज का लोभ नहीं रखना है। इस ज्ञान योग से सजना है, स्थूल श्रंगार से नहीं।
2) एक घड़ी आधी घड़ी, पढ़ाई अवश्य पढ़नी है। ज्ञान और योग में रेस करनी है।

वरदानः- संगमयुग के श्रेष्ठ चित्र को सामने रख भविष्य का दर्शन करने वाले त्रिकालदर्शी भव

भविष्य के पहले सर्व प्राप्तियों का अनुभव आप संगमयुगी ब्राह्मण करते हो। अभी डबल ताज, तख्त, तिलकधारी, सर्व अधिकारी मूर्त बनते हो। भविष्य में तो गोल्डन स्पून होगा लेकिन अभी हीरे तुल्य बन जाते हो। जीवन ही हीरा बन जाता है। वहाँ सोने, हीरे के झूले में झूलेंगे यहाँ बापदादा की गोदी में, अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलते हो। तो त्रिकालदर्शी बन वर्तमान और भविष्य के श्रेष्ठ चित्र को देखते हुए सर्व प्राप्तियों का अनुभव करो।

स्लोगनः- कर्म और योग का बैलेन्स ही परमात्म ब्लैसिंग का अधिकारी बना देता है।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

हर ब्राहमण बाप-सामन चैतन्य चित्र बनो, लाइट और माइट हाउस की झाँकी बनो। संकल्प शक्ति का, साइलेन्स का भाषण तैयार करो और कर्मातीत स्टेज पर वरदानी मूर्त का पार्ट बजाओ तब सम्पूर्णता समीप आयेगी। फिर सेकेण्ड से भी जल्दी जहाँ कर्तव्य कराना होगा वहाँ वायरलेस द्वारा डायरेक्शन दे सकेंगे। सेकेण्ड में कर्मातीत स्टेज के आधार से संकल्प किया और जहाँ चाहें वहाँ वह संकल्प पहुँच जाए।

''मीठे बच्चे – सबको एक बाप का ही परिचय दो, एक बाप से लेन-देन रखो, बाप को ही अपना सच्चा पोतामेल दो''

प्रश्नः- बच्चों से अब तक भी अनेक प्रकार की भूलें होती रहती हैं, उसका कारण क्या है?

उत्तरः- मुख्य कारण है – योग में बहुत कच्चे हैं। बाप की याद में रहते तो कभी कोई बुरा काम हो नहीं सकता। नाम रूप में फँसेंगे तो योग लग नहीं सकता। तुम पतित से पावन बनने की धुन में रहो। निरन्तर शिवबाबा की याद में रहो, तुम्हारा आपस में जिस्मानी प्यार नहीं होना चाहिए।

गीतः- जले न क्यों परवाना...

धारणा के लिये मुख्य सारः-

1) ज्ञान के साथ-साथ अपना भविष्य बनाने की युक्ति भी सीखनी है। एक बाप से वर्सा लेना है। किसी देहधारी के पीछे बदकिस्मत नहीं बनना है।
2) आपस में किसी बात के कारण बाप की सर्विस नहीं छोड़ना है। सवेरे-सवेरे उठकर अपने आपसे बातें करनी है। याद करने की मेहनत करनी है।

वरदानः- अपनी श्रेष्ठ धारणाओं प्रति त्याग में भाग्य का अनुभव करने वाले सच्चे त्यागी भव

ब्राह्मणों की श्रेष्ठ धारणा है सम्पूर्ण पवित्रता। इसी धारणा के लिए गायन है ''प्राण जाए पर धर्म न जाये।'' किसी भी प्रकार की परिस्थिति में अपनी इस धारणा के प्रति कुछ भी त्याग करना पड़े, सहन करना पड़े, सामना करना पड़े, साहस रखना पड़े तो खुशी-खुशी से करो – इसमें त्याग को त्याग न समझ भाग्य का अनुभव करो तब कहेंगे सच्चे त्यागी। ऐसी धारणा वाले ही सच्चे ब्राह्मण कहे जाते हैं।

स्लोगनः- सर्वशक्तियों को अपने ऑर्डर में रखने वाले ही मास्टर सर्वशक्तिमान हैं।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

जैसे साकार में देखा लास्ट सम्पन्न व कर्मातीत स्टेज का पार्ट सिर्फ ब्लैसिंग देने का रहा, बैलेन्स की भी विशेषता और ब्लैसिंग की भी कमाल रही। ऐसे फॉलो फादर। सहज और शक्तिशाली सेवा यही है। अब विशेष आत्माओं का पार्ट है ब्लैसिंग देने का। चाहे नयनों से दो, चाहे मस्तकमणी द्वारा। कर्म करते भी कर्म के बन्धनों से सदा अतीत अर्थात् न्यारे रहो। कभी कर्मों के वशीभूत नहीं, कर्मेन्द्रियों द्वारा हर कर्म करते हुए अधिकारीपन के नशे में रहो, यही सम्पूर्णता की स्टेज है।

''सन्तुष्टमणियों का भाग्य – दिल का गीत:पाना था सो पा लिया''

- आज बच्चों के याद और प्यार ने बापदादा को इस साकारी दुनिया में अपनी आकर्षण से बुला लिया। हर एक बच्चे के भाग्य और प्राप्ति को देख मिलन मना रहे हैं।
- हर बच्चे के चेहरे में चमकता हुआ भाग्य दिखाई दे रहा है। मस्तक में लाइट की प्राप्ति चमक रही है। हाथों में ज्ञान का भण्डार दिखाई दे रहा है। दिल में दिलाराम दिखाई दे रहा है। पाँव में कदम में पदम दिखाई दे रहा है।
- सभी चारों ओर के बच्चे सन्तुष्ट स्वरूप दिखाई दे रहे हैं। ऐसे चेहरे चमकते हुए देख अन्य आत्मायें भी सोचती हैं इन्हों को क्या मिला है! तो आप क्या जवाब देंगे? जो पाना था वो पा लिया...।
- अभी हर एक समझे कि मैं इस बेहद के कार्य के लिए सिर्फ स्वयं के लिए नहीं, स्वयं के साथ सेवा के भी निमित्त हूँ। अब ऐसी कमाल दिखाओ, दुनिया में हलचल और हलचल को अचल बनाने वाले निमित्त आप हो।

वरदान:- सदा साथ के अनुभव द्वारा मेहनत की अविद्या करने वाले अतीन्द्रिय सुख वा आनंद स्वरूप भव

जैसे बच्चा अगर बाप की गोदी में है तो उसे थकावट नहीं होती। अपने पाँव से चले तो थकेगा भी, रोयेगा भी। यहाँ भी आप बच्चे बाप की गोदी में बैठे हुए चल रहे हो। ज़रा भी मेहनत वा मुश्किल का अनुभव नहीं। संगमयुग पर जो ऐसे सदा साथ रहने वाली आत्मायें हैं उनके लिए मेहनत अविद्या मात्रम् होती है। पुरुषार्थ भी एक नेचुरल कर्म हो जाता है, इसलिए सदा अतीन्द्रिय सुख वा आनंद स्वरूप स्वत: बन जाते हैं।

स्लोगन:- रूहे गुलाब बन अपनी रुहानी वृत्ति से वायुमण्डल में रुहानियत की खुशबू फैलाओ।

अव्यक्त इशारे

ब्रह्मा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करो

जैसे ब्रह्मा बाप सदा अशरीरी स्थिति में रह, शरीर का आधार लेकर कर्म किया फिर न्यारे हो गये। इसी प्रैक्टिस से वे कर्मातीत बने। आप बच्चे भी कर्म करते भी ऐसा अनुभव करो जैसे कोई वस्त्र धारण कर कार्य रहे हैं। कार्य पूरा हुआ और वस्त्र से न्यारे हुए। शरीर और आत्मा दोनों का न्यारापन चलते-फिरते भी अनुभव हो।